# प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 47 * AUG 2011 *

| SN | Title | Min | Coding | | | Contents | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 01.mp3 | 34 | ⊕ | ⊕ | | छा०उ०-७तवाँ अध्याय :: **नारद-सनतकुमार सम्वाद** :- नारद द्वारा अपने अध्ययन का सविस्तार वर्णन :: १ एक लाख मंत्र वाले चारों वेद २ चारों इतिहास/महाभारत+अष्टादस पुराण ३ वेदों के छः अंग-शिक्षा कल्प **व्याकरण** निरुक्त छन्द ज्योतिष ४ ००० | 1 |
| 2 | 02.mp3 | 36 | ⊕ | ⊕ | | 'नवधा' भक्ति :- ८ व्यवहार में निर्वाह के लिये नीति न्याय मर्यादा से कमाई करें और उसी में सन्तुष्ट रहें। मिलेगा उतना ही जितना प्रारब्ध में है, अन्याय से लाया गया धन नहीं ठहरता। ऐसा धन दुःख और व्याधि लाता है और घर का भी धन ले जाता है तथा दूसरे का दोष कभी मत देखो क्योंकि इससे द्वेष उत्पन्न होता है, द्वेष और भी बड़ा पाप है, गुण-दोष दोनों ही मायाकृत हैं गुणों से राग व दोषों से द्वेष उत्पन्न होता है अतः अच्छे-बुरे दोनों लोगों में व्याप्त भगवान का ही दर्शन करना चाहिये | 13 |
| 3 | 03.mp3 | 31 | ⊕ | ⊕ | | छा०उ०-७तवाँ अध्याय :: **नारद-सनतकुमार सम्वाद** :- नारद द्वारा अपने अध्ययन का सविस्तार वर्णन:: ३ वेदों का वेद **व्याकरण** जो वेद का मुखरूप मुख्य अंग है ४ पितृं-पितर विद्या ५ राशिम्-गणित शास्त्र ६ दैवम्-देवताओं के उत्पात ७ निधिं-भूगर्भ विद्या ८ वाकोवाक्यं-तर्क शास्त्र ९ एकायनं-नीति शास्त्र १० देव विद्यां-यज्ञादि ११ ब्रह्म विद्यां-उपनिषद १२ भूत विद्यां १३ क्षत्र विद्यां - धनुर्विद्या १४ नक्षत्र विद्यां-ज्योतिष १५ सर्प विद्यां-गारुड़ी शास्त्र १६ देवजन विद्यां-संगीत ::: **ईश्वर की वाणी परम प्रमाण है** क्योंकि उसमें जीव के चारों दोष नहीं हैं :- १ भ्रम २ प्रमाद ३ कर्णापाटो ४ विप्रलिप्सा ::: | 2 |
| 4 | 04.mp3 | 26 | ⊕ | ⊕ | | नवधा' भक्ति :- ८ दूसरे का दोष कभी मत देखो क्योंकि इससे द्वेष उत्पन्न होता है, द्वेष और भी बड़ा पाप है, गुण-दोष दोनों ही मायाकृत हैं गुणों से राग व दोषों से द्वेष उत्पन्न होता है अतः अच्छे-बुरे दोनों लोगों में अस्ति-भाति रूप से व्याप्त भगवान का ही दर्शन करना चाहिये। मायाकृत गुण-दोषमय संसार **दृश्य** है और हमारा स्वरूप **द्रष्टा** हैं :: **दृग-दृश्य विवेक** :: | 14 |
| 5 | 05.mp3 | 29 | ⊕ | ⊕ | | **नारद-सनतकुमार सम्वाद** :- नारद द्वारा अपने अध्ययन का सविस्तार वर्णन :: भूगर्भ वेत्ता संत और निर्धन सेठ की कथा | 3 |
| 6 | 06.mp3 | 32 | ⊕ | ⊕ | | नवधा' भक्ति :- ८ स्वप्न में भी किसी के दोष नहीं देखने चाहिये इससे द्वेष उत्पन्न होता है, दोष अपने देखो और दूसरों के गुण अपनाओ ९ सरल स्वभाव सहित सभी के साथ निश्छल-निष्कपट व्यवहार करो तथा मेरा पूरा भरोसा रखो क्योंकि भगवान अपनी प्रतिज्ञावश अपने भक्त की सदैव इच्छा पूर्ण करते हैं। | 15 |
| 7 | 07.mp3 | 24 | ⊕ | ⊕ | | :: **नारद-सनतकुमार सम्वाद** :- नारद द्वारा अपने अध्ययन का सविस्तार वर्णन :: तर्कशास्त्र का विस्तृत वर्णन | 4 |
| 8 | 08.mp3 | 43 | ⊕ | ⊕ | | भगवान के ज्ञान का साधन वेद और गुरु हैं। भगवान के दर्शन में अवरोध मल-विक्षेप-आवरण के निवारण हेतु वेद में कर्म-उपासना-ज्ञान तीन कॉंड हैं। अपने वर्णाश्रम-पदाधिकारानुसार निष्काम कर्म ही कर्मयोग है जिससे चित्त शुद्ध होता है तदोपरान्त भक्ति से चित्त एकाग्रता होती है और फिर भक्ति के ज्ञान और वैराग्य दो वीर पुत्र उत्पन्न होते हैं। भक्ति के बिना ब्रह्म ज्ञान कभी नहीं हो सकता वैसे ही जैसे साधन के बिना साध्य प्राप्ति संभव नहीं। उसी भक्ति का निरूपण भगवान राम ने नवधा भक्ति में किया है ९ सरल स्वभाव सहित सभी के साथ निश्छल-निष्कपट व्यवहार करो तथा और हृदय में हर्ष या दीनता लाये बिना मुझ ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो। इसप्रकार मुझ स०सा० भगवान के दर्शन का यही फल है कि जीव अपने सहज स्वरूप को पा जाता है - ईश्वर अंश जीव भी अविनाशी है। | 16 |
| 9 | 09.mp3 | 31 | ⊕ | ⊕ | | :: **नारद-सनतकुमार सम्वाद** :- नारद के माध्यम से यह प्रत्यक्ष है आत्मज्ञान के बिना शोक निवृत्ति संभव नहीं :: सनतकुमार जी द्वारा आत्मज्ञान :- **'भूमा'** तत्त्व ही सुख है, भूमा नाम महान का है यानि सबसे बड़ा, वही ब्रह्म है। अल्प में सुख नहीं है अतः भूमा को ही जानना चाहिये। जहाँ इ०म०बु० नहीं जा सकतीं वह भूमा है। जो इन्द्रियों से देखा व मन से सोचा जा सकता है वह अल्प है। पाँच इन्द्रियों से मायाकृत विषयों का सीमित ज्ञान ही होता है। ब्रह्म का स्वरूप 'सच्चिदानंद' है - तत्त्वमसि। जा०स्व० सु० दृश्य माया है एवं इनका द्रष्टा ही ब्रह्म है **"वह ब्रह्म मैं हूँ"** - स्वयं को ऐसा जानने वाला नित्य मुक्त है। | 5 |
| 10 | 10.mp3 | 45 | ⊕ | | | **ब्रह्मोपनिषद में सृष्टि क्रम** :: सृष्टि के आदि में एक सच्चिदानंद ब्रह्म ही था दूसरा कोई नहीं था फिर रज्जु में सर्प की भाँति ब्रह्म से अव्यक्त/माया का प्रादुर्भाव हुआ :: सच्चि०ब्रह्म ▶ अव्यक्त/महामाया शक्ति ▶ महत् तत्त्व/ब्रह्मा/हि०ग०/समष्टि बुद्धि ▶ अहंतत्त्व/समष्टि मन ▶ पंचतन्मात्रा ▶ पंचभूत ▶ पंचीकृत पंचभूत ▶ स्थूल जगत | 1 |
| 11 | 11.mp3 | 30 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | सामवेद छा०उ०-छटा अध्याय :: **उद्दालक ऋषि का पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश** :: हे पुत्र ! एक ऐसी विद्या है जिस एक को जानने से सर्व का ज्ञान हो जाता है क्या तुमने वह पढ़ी है? पुत्र ने कहा नहीं, तब उ०ऋषि बोले :- एक **'सत्य'** के ज्ञान से सर्व का ज्ञान हो जाता है, जो सत् है वह **'चिद्'** और **'आनंद'** भी है। उसी से संसार उत्पन्न होता है उसी में रहता व उसी में लीन होता है जैसे एक माटी के पिण्ड को जान लेने से माटी से बने सभी घट-मठ जानने में आ जाते हैं तथा एक स्वर्ण को जानने से सभी आभूषण जाने जाते हैं। कारण को जानने से सभी कार्य जाने जाते हैं क्योंकि कारण से कार्य भिन्न नहीं होते। सभी घट-मठ नाम-रूप वाणी के कल्पित विकार हैं अतः माटी सत्य है व घट-मठ मिथ्या हैं, घट-मठ माटी से उत्पन्न होते हैं माटी में रहते व माटी में लीन हो जाते हैं। | अ |
| 12 | 12.mp3 | 34 | ⊕ | | | उपनिषद के द्वारा ब्रह्म ज्ञान - **ब्रह्मोपनिषद** :: सच्चि०ब्रह्म ▶ अव्यक्त/महामाया शक्ति ▶ महत् तत्त्व/ब्रह्मा/हि०ग०/समष्टि बुद्धि ▶ अहंतत्त्व/समष्टि मन ▶ पंचतन्मात्रा ▶ पंचभूत ▶ पंचीकृत पंचभूत ▶ स्थूल जगत :: तीन शरीर :: तीन अवस्थाऐं :: पाँचकोष । विपरीत क्रम में इनका विलय हो जाता है और अंत में एक अकेला ब्रह्म ही रह जाता है। **'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या'** | 2 |
| 13 | 13.mp3 | 31 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | सामवेद छा०उ०-छटा अध्याय :: **उद्दालक ऋषि का पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश ::** हे पुत्र ! जिस एक को जानकर सब कुछ जान लिया जाता है क्या तुमने वह विद्या पढ़ी है? पुत्र ने कहा नहीं, तब उ०ऋषि बोले :- जैसे एक माटी के पिण्ड को जान लेने से माटी से भिन्न सभी घट-मठ जाने जाते हैं क्योंकि माटी कारण है व घट-मठ कार्य हैं और कार्य कारण से जुदा नही होता, माटी के बिना उनकी सत्ता ही नहीं है। ऐसे ही ब्रह्म से भिन्न ये जगत नहीं है ⊕ सृष्टि के आदि में एक ब्रह्म ही था उससे तेज/अग्नि ▶ जल ▶ पृथ्वी ▶ जगत की उत्पत्ति हुई । इसप्रकार जगत ब्रह्म से उत्पन्न होता है, उसी में रहता व लीन हो जाता है और अन्त में एक ब्रह्म ही शेष रह जाता है। ये सब माया का कार्य है । कारण ही सत्य होता है कार्य कल्पित होता है । **'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म'** - **'तत्तवमसि'** । ब्रह्म आनंद सिन्धु है तथा कल्पित जगत तरंग के समान है। | ब |
| 14 | 14.mp3 | 42 | ⊕ | | | **तैत्रीय उप० द्वारा सृष्टि क्रम** :: ब्रह्म से/हमारी तुम्हारी आत्मा से सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश सबका आधार है एवं सबसे बड़ा है ▶ वायु ▶ अग्नि ▶ आपः/जल - पृथ्वी - औषधियाँ - अन्न - रेतः/शुक्र/वीर्य :: **सविस्तार गर्भोपनिषद** :: | |
| 15 | 15.mp3 | 30 | ⊕ | | | **भगवान राम से हनुमानजी ने अपने निजि०स्वरूप निरूपण** की प्रार्थना करने पर भगवान बोले हे हनुमान ! तुम वेदान्त का आश्रय लो जो तिलों में तेल की भाँति चारों वेद में सर्वत्र समाया है तथा वेद मेरे निःस्वास स्वरूप ही है। किसी भी कार्य की सम्पन्नता के लिये निमित्त और उपादान कारण की आवश्यकता होती है और इसके अनुष्ठान में निमित्त में ज्ञान-इच्छा-प्रयत्न होना भी अनिवार्य है। अतः वेद और जगत का मैं ही निमित्तोउपादान कारण हूँ। कारण अपने कार्य में व्याप्त होता है । | |
| 16 | 16 .mp3 | 50 | ⊕ | | | **तैत्रीय उप० द्वारा भगवत् स्वरूप निरूपण :- कर्मयोग विवेचन** - पंचयज्ञ १ ब्रह्मयज्ञ-ब्रह्म ज्ञान अध्ययन/अध्यापन २ पितृयज्ञ - पिण्ड दान वाहक वरुणदेव ३ देवयज्ञ-आहुति वाहक अग्निदेव ४ भूतयज्ञ-पशु, पक्षी, वनस्पति सेवा ५ नृयज्ञ/अतिथि सत्कार **संन्यासयोग विवेचन** - सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज... भक्त प्रहलाद-विभीष्ण-भरत-द्रौपदी-मीरा आदि के दृष्टान्त | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | 17.mp3 | 30 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | सामवेद छा०उ०-छटा अ०:: **उद्दालक ऋषि का पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश ::** हे पुत्र ! :- जैसे एक माटी के पिण्ड को जान लेने से माटी से भिन्न सभी घट-मठ जाने जाते हैं क्योंकि माटी कारण है व घट-मठ कार्य हैं। कार्य कारण से भिन्न नही होता तथा माटी के बिना उनकी सत्ता ही नहीं है। कारण के ज्ञान से कार्य का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है। ऐसे ही ब्रह्म से भिन्न ये जगत नहीं है। ज्ञान-इच्छा-प्रयत्न वाला **निमित्त** और **उपादान** पृथक दो कारण होते हैं पर भ० जगत के अभिन्न नि०उ० कारण हैं | स |
| 18 | 18.mp3 | 42 | ⊕ | ⊕ | | तैत्रीय उ०-सृष्टिक्रम :: सृष्टि के आदि में एक परमात्मा ही था व उनका स्वरूप था 'सच्चिदानंद'। परमात्मा से अथवा हमारी तुम्हारी आत्मा से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु - अग्नि - जल - पृथ्वी - औषधियाँ - अन्न - रेत/वीर्य - पुरुष । वह परम् ब्रह्म परमात्मा ही अन्न रस पुरुषरूप में आया है। पंचभूत के पंचीकरण से स्थूलशरीर, अपंचीकृत पंचभूतों से १६ तत्त्वों वाला सूक्ष्मशरीर बनता है तथा स्वरूप अज्ञान ही कारण शरीर है। | |
| 19 | 19.mp3 | 21 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | सामवेद छा०उ०-छटा अ०:: **उद्दालक ऋषि का पुत्र श्वेतकेतु को उपदेश ::** हे पुत्र ! :- जैसे एक माटी के पिण्ड को जान लेने से माटी से भिन्न सभी घट-मठ का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है क्योंकि वे घट-मठ से अभिन्न हैं कार्य कारण से भिन्न नही होता, ऐसे ही आभूषण स्वर्ण से तथा तरंगें जल से भिन्न नहीं हैं ⊕ सृष्टि के आदि में एक ब्रह्म ही था उससे तेज/ अग्नि - जल - पृथ्वी - जगत की उत्पत्ति हुई । इसप्रकार जगत ब्रह्म से उत्पन्न होता है, उसी में रहता व लीन हो जाता है और अन्त में एक ब्रह्म ही शेष रह जाता है। ये सब माया का कार्य है । कारण ही सत्य होता है कार्य कल्पित होता है । **'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म'** - **'तत्तवमसि'** । ब्रह्म आनंद सिन्धु है तथा कल्पित जगत तरंग के समान है। | द |
| 20 | 20.mp3 | 38 | ⊕ | ⊕ | | तैत्रीय उपनिषद :: जिस प्रकार प्राण, सुन्दरता एवं ज्ञान की दृष्टि से शरीर में 'सिर' श्रेष्ठ है वैसे ही **उपनिष /ज्ञानकाण्ड** वेदों के सिरोभाग हैं। जो वेदों के केवल कर्म और भक्तिकाण्ड का ही अध्ययन करता है और ज्ञानकाण्ड को नहीं पढ़ता वह मानो सिर का छेदन कर केवल कबन्ध को ही सभाँलना चाहता है अतः वेद में ज्ञानकाण्ड ही श्रेठतम है। भारत भूमि एवं नर शरीर की श्रेष्ठता का वर्णन..... | |
| 21 | 21.mp3 | 30 | ⊕ | | | भगवान के ज्ञान के साधन भगवान की वाणी वेद और गुरु हैं। वेद त्रिकाण्डमय है - पहला कर्मकाण्ड दूसरा भक्तिकाण्ड और तीसरा ज्ञानकाण्ड है। कर्मकाण्ड में निष्कामकर्म एवं बहुतों की सेवा बनती है व भक्तिकाण्ड में केवल भक्त और भगवान होते हैं। भगवान का ध्यान-चिन्तन करने वाला संसार की चिन्ता-मुक्त तथा भगवत रूप ही हो जाता है। | |
| 22 | 22.mp3 | 45 | ⊕ | ⊕ | | ज्ञान की महिमा :-जिससे सर्वाधिक प्रेम होता है वही हर पल याद आता रहता है, **जड़भरत** एवं **रानी चुड़ैला की कथा + उपदेश** :- ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति के लिये **'केवल भगवान का ध्यान करो तथा सर्व का त्याग करो'** - **"मैं पने" का अहंकार त्यागो** क्योंकि देह इ०म०बु० भी अपने नहीं हैं उनमें भी अभिमान का त्याग ही सर्व का त्याग है फिर केवल द्रष्टा-साक्षी चेतन आत्मा ही शेष बचा, वही सच्चिदानंद भगवान है, ब्रह्म है यानि स्वरूपावस्थान है । द्रष्टा ही ब्रह्म है और दृश्य भगवान की माया है । | *** Imp *** |
| 23 | 23.mp3 | 30 | ⊕ | ⊕ | | तुलसीदासजी ने भगवान के निनि० और ससा०स्वरूप का निरूपण अग्नि के दृष्टान्त द्वारा किया है। ब्रह्म का निनि० स्वरूप व्यापक अव्यवहारिक-अग्नि तथा ससा० प्रकट व्यवहारिक-अग्नि के समान है, इसीप्रकार व्यापक ब्रह्म सच्चिदानंद सबके हृदय में स्थित हैं परन्तु अव्यवहारिक है किन्तु माया से राम/कृष्ण रूप में प्रकट भगवान ही वयवहारिक है और वही विश्व-विराट के रूप में और प्रति- बिम्ब रूप से प्रत्येक जीव के घट रूपी शरीर में बुद्धि-रूपी जल में प्रकट है। | |
| 24 | 24.mp3 | 49 | ⊕ | ⊕ | | **मुक्तिकोपनिषद :: श्रीराम - हनुमान सम्वाद ::** हे प्रभु! आप परमात्मा सच्चिदानंद विग्रह हैं और मैं आपके स०सा० स्वरूप की नित्य सेवा में हूँ किन्तु मैं आपके नि०नि० स्वरूप को नहीं जानता जिसके जानने मात्र से जीव इस भवसागर से मुक्त हो जाता है। इसपर भग० राम बोले हे हनुमान ! मेरा निनि० स्वरूप वेदान्त में स्थित है अतः तुम वेदान्त का आश्रय लो। मुझ ईश्वर के निःश्वास रूप वेद हैं और वेद के अन्तिम निर्णय को वेदांत कहते हैं। | |
| 25 | 25.mp3 | 32 | ⊕ | ⊕ | | **वेद में भगवान के निनि० और ससा० दो रूप बताये हैं** जैसे **व्यापक अग्नि** 'निनि० और अव्यवहारिक' है तथा ज्योति एवं उष्णता रूप में **प्रकट अग्नि** 'ससा० और व्यवहारिक' है। **सृष्टिक्रम** :: सर्वप्रथम सच्चि०ब्रह्म से रज्जु में सर्प की, स्वप्न द्रष्टा में स्वप्न की या पुरुष में छाया की भाँति अव्यक्त नामनी माया प्रकट हुई, उसने विद्या-अविद्या का रूप धारण किया फिर व्यापक ब्रह्म का विद्या-अविद्या उपाधि में प्रतिबिम्ब रूप से प्राकट्य हुआ और वे क्रमशः ईश्वर और जीव कहलाये अतः अधि०ब्रह्म + विद्या माया + प्रतिबिम्ब = ईश्वर और अधि०ब्रह्म + अविद्या माया + प्रतिबिम्ब = जीव । ईक्षण से प्रवेश पर्यन्त ईश्वर की कल्पना है और जा०स्व०सु०+बन्ध+मोक्ष - जीव की कल्पना है । कल्पित की निवृत्ति सत्य में होती है अतः **'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या'** । | |
| 26 | 26.mp3 | 57 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | **मुक्तिकोपनिषद :: श्रीराम - हनुमान सम्वाद ::** भगवान राम द्वारा **अपना निनि०स्वरूप निरूपण :-** हनुमान तुम वेदान्त का आश्रय लो जो मेरे निःस्वास रूप वेदों में तिलों में तेल की भाँति व्याप्त है। मुझे जानने के लिये एक माण्डूक्य उप० ही पर्याप्त है। माण्डूक्य उप० :- प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण का निरूपण । | मा० उ० १ |
| 27 | 27.mp3 | 28 | ⊕ | | | सृष्टिक्रम - ब्रह्म - इच्छा/महामाया शक्ति - स्वयं जगत का रूप धारण कर लिया - देहरूपी घटों के बुद्धिरूपी जल में ब्रह्म 'जीव' रूप से प्रतिबिम्बित होते हैं - देह व्यवहार करने लगे। भगवान राम के अयोध्या लौटने पर एकसाथ प्रजा-मिलन का प्रसंग | |
| 28 | 28.mp3 | 29 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | **मुक्तिकोपनिषद :: भगवान राम द्वारा अपना निनि०स्वरूप निरूपण:-** सब वेदों में वेदान्त तिलों में तेल अथवा काष्ठ में अग्नि की भाँति समाया है। वेदान्त ही मुझे जानने का साधन है। ४ वेद हैं, इनकी शाखाऐं इस प्रकार हैं :: ऋगवेद-२१, यजुर्वेद-१०६, सामवेद-१०००, अथर्व वेद-५० = ११८० । इनमें १०८-३२-१० उपनिषद मुख्य हैं उनमें भी मा०उ० सर्वश्रेष्ठ है जिसमें ओंकार के माध्यम से ब्रह्म का स्वरूप निरूपण है। माण्डूक्य उप० **:-** प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चौथे चरण यानि **आत्मा का निरूपण** । | मा० उ० २ |
| 29 | 29.mp3 | 31 | ⊕ | | | ब्रह्म का स्वरूप :: **श्रीमद्भागवत - १ : १ : १ :-** इस श्लोक के तीन रूप बताये हैं 'निनि०-सनि०-ससा०' व इसके चार चरण हैं। **पहले चरण** में स०नि० - जिसमें जगत के जन्मादि होते हैं। **ब्रह्म ज्ञान अधिकार के साधन :: विवेक :-** जगत चलायमान और विनाशी है तथा आत्मा अचल-अविनाशी है **वैराग्य :-** सभी भोग नाशवान एवं दुःखरूप हैं और भगवान अमृतरूप हैं **षट्क सम्पत्ति :-** शम, दम, उपरम, तितीक्षा, श्रद्धा, समाधान **मुमुक्षुता :-** मोक्ष की प्रबल कामना | |
| 30 | 30.mp3 | 51 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | **अथर्ववेदीय** माण्डूक्य उ०**/रामोत्तरतापनी उ० + ओंकार का स्वर-व्यंजन में विस्तार** :: हमारी आत्मा के **४ पाद** हैं :- विश्व, तैजस, प्राज्ञ और ब्रह्म । चार अवस्थाऐं क्रमशः जागृत स्वप्न सुषुप्ति एवं तुरीय इनकी पत्नियाँ हैं अतः विश्व जागृत का स्वामी/ भोक्ता, तैजस स्वप्न का स्वामी/भोक्ता व प्राज्ञ सुषुप्ति का स्वामी व इसके आनंद का भोक्ता है इसके आगे ब्रह्म एवं तुरीयावस्था रूपी सीता है जो समाधि अवस्था में प्राप्त होती है। विश्व-लक्ष्मण, तैजस-शत्रुघ्न, प्राज्ञ-भरत ईश्वर हैं जो केवल आनंद का ही भोग करते है। ये ईश्वर ही जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार करते हैं। इनके आगे तुरीयावस्था सीता हैं जिनके स्वामी ब्रह्मा' राम हैं। राम अंशी हैं और भरत-शत्रुघ्न-लक्ष्मण अंश हैं जो अंशी से उत्पन्न होकर अंशी में ही विलीन हो जाते हैं। | मा० उ० ३ |
| 31 | 31.mp3 | 31 | ⊕ | ⊕ | | ब्रह्मसूत्र-प्रथम श्लोक :: **'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा', अथ =** १-मंगलाचरण २-आरम्भ ३-साधन चतुष्ट्य के पश्चात ४-सम्पूर्ण । जिस प्रकार स्वच्छ-स्थिर-अनावृत अर्पण में अपने मुख का दर्शन हो जाता है उसी प्रकार 'कर्म-उपासना-ज्ञान' द्वारा संस्कारित शुद्ध-एकाग्र-अज्ञान आवरण रहित अंतःकरण में भगवान के दर्शन हो जाते है क्योंकि व्यापक ब्रह्म सभी जीवों के अन्तःकरण / बुद्धि में प्रतिबिम्बित है,सभी शरीर मन्दिर हैं व मैं सभी मन्दिरों में विराजमान हूँ अतः मेरे दर्शनार्थ अर्न्तमुखी होना ही अभीष्ट है | |
| 32 | 32.mp3 | 50 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | **मा०उ०में ओंकार के माध्यम से आत्मा और परमात्मा का एकत्व बताया है,** ये जगत यानि सब कुछ निश्चय ही ब्रह्म है। हमारा आत्मा ब्रह्म है। इसके ४ चरण/रूप हैं - विश्व, तैजस, प्राज्ञ और शुद्ध-ब्रह्म तथा जा० स्व०सु० व तुरीय ४ अवस्थायें हैं। आत्मा/परमात्मा के ही ये चार रूप हैं, शुद्ध-ब्रह्म अंशी है व शेष तीन अंश हैं। मकार/ईश्वर से जा०स्व० की उत्पत्ति बताई है। अ०उ०म० तीन मात्राओं के आगे मात्रा रहित राम अथवा ब्रह्म/आत्मा है वही हमारा तुम्हारा स्वरूप है, ४थी तुरीयावस्था सीताजी महामाया शक्ति मूल-प्रकृति हैं जिससे जा०स्व०सु० की उत्पत्ति होती है। ब्रह्म् एक अद्वितीय है किन्तु माया से ये ४ रूप धरता हैं यानि सत्य ब्रह्म के ३ रूप काल्पिनिक हैं जिनके बाध होने पर एक ब्रह्म ही शेष रह जाता है + **रामोत्तरतापनी उ० + रानी चुड़ैला** का **उपदेश**:- ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के लिये **'केवल भगवान का ध्यान करो तथा सर्व का त्याग करो-** *See 22* | मा० उ० ४ |
| 33 | 33.mp3 | 31 | ⊕ | ⊕ | | ब्रह्मसूत्र-द्वितीय श्लोक :: ब्रह्म का स्वरूप :: **'जन्मादि अस्य यतः'-**जिससे इस जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय होती है एवं जो सर्वत्र व्याप्त है, वह ब्रह्म है। इसी सूत्र से श्रीमद्भागवत् का प्रारम्भ भी हुआ है। इस श्लोक के ४ चरण हैं १ सनि० २ ससा० ३ निनि०-दृष्टान्त :- रज्जु-सर्प, मृग-तृष्णा तथा ४ शुद्ध ब्रह्म का स्वरूप निरूपण + ईश्वर और जीव का वाच्यार्थ। कारणरूप से मैं सत् हूँ व कार्यरूप से मैं ही असत् हूँ यानि सत्रूप भी मैं हूँ और माया से असत्रूप भी मैं हूँ। | 1 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 34 | 34.mp3 | 55 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | **अन्नपूर्णोपनिषद** :: **जीव की पाँच भ्रान्तियाँ** :: १ **भेद-भ्रान्ति** - जीव-ईश्वर में भेद विद्या-अविद्या उपाधि के कारण है पर लक्ष्यार्थ में अभेद हैं, दृष्टान्त=ब्रह्म/बिम्ब तथा ईश्वर-जीव/प्रतिबिम्ब :: 'भ⊕त्याग लक्षणा' द्वारा विद्या-अविद्या उपाधि में पड़े दोनों प्रतिबिम्ब का त्याग करने पर केवल बिम्ब ही शेष रहता है अतः ब्रह्म-जीव का तत्त्वमसि महावाक्य द्वारा एकत्व है २ कर्ता- भोक्ता भ्रान्ति ३ संग भ्रान्ति ४ जगत भगवान का विकार है ५ जगत भगवान से भिन्न एवं सत्य है | भाग -१ - |
| 35 | 35.mp3 | 29 | ⊕ | ⊕ | | **श्रीमद्भागवत् :: १/१/१ ::** भगवान के ३ स्वरूपों का निरूपण :: इस श्लोक के चार चरण हैं १ले चरण में भगवान के स०नि०, २सरे में स०सा० ३सरे माया का स्वरूप - जगत असत् होते हुए भी सत्य भासता है दृष्टान्त :- रज्जु-सर्प, मृग-तृष्णा का जल ४थे में नि०नि० स्वरूप का निरूपण है। सर्वप्रथम स०नि०/ईश्वर से ब्रह्मा उत्पन्न हुए फिर स०सा०/चतुर्भुज विष्णु रूप ने शोक-मोहयुक्त ब्रह्मा को ज्ञान का **'चतुश्लोकी भागवत'** के रूप में उपदेश किया । | 2 |
| 36 | 36.mp3 | 41 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | :: **जीव की पाँच भ्रान्तियाँ** :: १ **भेद-भ्रान्ति** जीव-ईश्वर भिन्न-भिन्न हैं ::समाधान:: ब्रह्म ही सत्य है, ईश्वर और जीव दोनों कल्पित हैं तथा ब्रह्म का नाम 'बिम्ब' व ईश्वर/जीव का नाम 'प्रतिबिम्ब' भी उपाधि की अपेक्षा से कल्पित हैं। पाँच और भेद :- १जीव-ईश्वर भेद दृ०बिम्ब-प्रतिबिम्ब २जीव-जीव भेद दृ०-घटाकाश-महाकाश ३जीव-जड़ ४जड़-जड़ ५ईश्वर-जड़ - ३,४,५ के दृ०-स्वप्न में सब एक साथ ही होते हैं तीन और भेद :- १सजातीय २विजातीय ३स्वगत :: **हमारा स्वरूप सर्वभेद रहित एक अद्वितीय सच्चिदानंद आत्मा ही है, नाम-रूप कल्पित होते है केवल पुरुष ही सत्य है** :: २ **कर्ता-भोक्ता भ्रान्ति** सारे कर्म मायाकृत देह इ० म० बु० प्राण यानि **'दृश्य'** में हैं हम तो केवल देखते हैं, हम **'द्रष्टा'** अकर्म हैं, निश्चय ही सभी कर्म प्रकृति में हैं, दृष्टान्त - स्फटिक मणि और जवाकुसुम । | भाग -२- |
| 37 | 37.mp3 | 47 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | :: जीव की पाँच भ्रान्तियाँ :: सभी भ्रम झूठे होते हैं ये जीव को भगवान के दर्शन में व्यवधान हैं १ **भेद-भ्रान्ति** बिम्ब-प्रतिबिम्ब के दृष्टान्त से जीव-ईश्वर भेद-भ्रम का नाश हो जाता है, जैसे बिम्ब और प्रतिबिम्ब दोनों सूर्य में कल्पित हैं वैसे ही ब्रह्म में जीव-ईश्वरपना कल्पित है। जीव-ईश्वर में अधिष्ठान भाग ब्रह्म ही सत्य है २ **कर्ता-भोक्ता भ्रम** आत्मा अकर्म और असंग है, आत्मा में कर्तृत्व-भोक्तृत्व का होना भ्रम है, दृ०: स्फटिक मणि और जवाकुसुम, हमारा आत्मा स्फटिक मणि के समान उज्ज्वल है तथा देह इ०इ०म०बु० के कर्म आत्मा भासते हैं, आत्मा द्रष्टा है व देह दृश्य है ३ **संग भ्रान्ति** 'मैं स्थू०-सू०-का० शरीर हूँ'- भ्रम है, हमारा आत्मा तीनों से असंग है दृ०: घटाकाश-महाकाश, जैसे घट के टूटने पर आकाश पूर्ववत् ही रहता है वैसे ही तीनों देह घट के समान तथा आत्मा आकाश के समान व्यापक अखंड और असंग है ४ **जगत ब्रह्म का विकार है** दृ०: रज्जु में सर्पवत्, सर्प रज्जु का विकार नहीं है अपितु रज्जु में भ्रम है, सर्प तीनों काल में नहीं था। जैसे रज्जु के अज्ञान से सर्प भासता है वैसे ही आत्मा के अज्ञान से संसार-सर्प भासता है ५ **ब्रह्म से जगत भिन्न एवं सत्य है** कार्य अपने कारण से अभिन्न और कल्पित होता है दृ०: स्वर्ण और आभूषण क्योंकि कारण कार्य में व्याप्त होता है और कार्य का कारण में सर्वथा अभाव होता है-*'ब्रह्म सत्यं...'* | भाग -३- संपूर्ण |
| 38 | 38.mp3 | 32 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | **'चतुश्लोकी भागवत्'** हे ब्रह्मा! सृष्टि के आदि में एक मैं ही था । आरम्भ और अंत में भी एक मैं ही हूँ, मध्य में माया के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। तेरा चतुर्मुख और मेरा चतुर्भुज रूप भी मायाकृत ही है। मेरा और तेरा वास्तविक स्वरूप नि०नि० है तथा प्रकृति के साथ मैं स०सा०हूँ। *अब तू माया का स्वरूप और मेरा नि०नि०स्वरूप सुन :-* **माया** - प्रचण्ड सूर्य की किरणों से चमकते बालू के कणों से पानी का भ्रम 'मृग-मरीचिका' उत्पन्न होती है वैसे ही ये संसार मरुभूमि है जिसमें 'सुख' जल के समान है । जीव अपने सच्चिदानंद स्वरूप को न जानकर इस संसार में सुख यानि मृग-तृष्णा के जल के लिये भटक रहा है। ब्रह्मा से तृण-पर्यन्त ये जगत माया अथवा मृग-तृष्णा का जल है इसमें सुख का लेश भी नहीं है **नि०नि०** - स्वयं प्रकाशित सच्चिदानंद ब्रह्म/परमात्मा माया से परे है । कपटरूप माया रज्जुरूप ब्रह्म को ढाँककर संसार-सर्प दिखा देती है व जीव नश्वर देह में अभिमान कर मृत्यु से भय खाता है। शुद्ध ब्रह्म में उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय और जा०स्व०सु० तीनों नहीं हैं, हमारा स्वरूप सु० के आगे चौथा या तुरीय है । इस तुरीय का हम ध्यान करते हैं । | 3 |
| 39 | 39.mp3 | 41 | ⊕ | ⊕ | १ | **सरस्वती रहस्योपनिषद** :: **संसार के पाँच अंश** :: १ अस्ति २ भाति ३ प्रिय ४ नाम ५ रूप , आदि के तीन ब्रह्म का स्वरूप तथा शेष दो जगत का स्वरूप है । 'अस्ति-भाति-प्रिय' का दूसरा अर्थ 'सत्-चित्-आनंद' है । नाम-रूप कल्पित हैं । | |
| 40 | 40.mp3 | 32 | ⊕ | ⊕ | | **श्रीमद्भागवत् :: १/१/१ ::** भगवान के ३ स्वरूपों का निरूपण :: इस श्लोक के चार चरण हैं १ले में सनि० २सरे में ससा० ३सरे श्लोक में निनि०को समझाने के लिये मृगतृष्णा और रज्जुसर्प का दृष्टान्त है :- निनि० ब्रह्म में ये संसार मरुभूमि के जल के समान अथवा रज्जु में सर्प के समान भासता है, ब्रह्म का आभास इस संसार में पड़ता है तो संसार में थोड़ा-२ सुख प्रतीत होता है ४थे श्लोक में **निनि०का सविस्तार निरूपण**, ऐसे माया रहित शुद्ध स्वयं प्रकाशित परमसत्य ब्रह्म का हम ध्यान करते हैं। | 4 |
| 41 | 41.mp3 | 30 | ⊕ | ⊕ | २ | **सरस्वती रहस्योपनिषद** :: **संसार के पाँच अंश** :: १ अस्ति २ भाति ३ प्रिय ४ नाम ५ रूप, आदि के तीन ब्रह्म का स्वरूप तथा शेष दो जगत का स्वरूप है । **'अस्ति-भाति-प्रिय'** का दूसरा अर्थ 'सत्-चित्-आनंद' है । नाम-रूप जगत ब्रह्म में - 'पुरुष में छाया' अथवा 'रज्जु में सर्प' की भाँति माया से कल्पित है । 'अस्ति-भाति-प्रिय' सभी नाम-रूपों में व्यापक है, समाया है जो सदा रहेगा पर मायाकृत नाम-रूप जगत बदलता रहता है वह सदा नहीं रहेगा । जैसे रज्जु का ज्ञान होते ही सर्प रज्जु रूप ही हो जाता है वैसे ही स्वरूप ज्ञान होने पर ये सर्पवत् जगत भी रज्जु यानि ब्रह्मरूप हो जाता है व अंत में एक ब्रह्म ही शेष रहता है | |
| 42 | 42.mp3 | 56 | ⊕ | ⊕ | ⊕ | ये देह जड़ है तथा चेतन ब्रह्म तो ज्ञानस्वरूप ही है। सच्चिदानंद ब्रह्म के बुद्धि में प्रतिबिम्ब 'चिदाभास' को ही बन्ध और मोक्ष होता है। वेदान्त में **चिदाभास की ७ अवस्थाएँ** वर्णित हैं :- १ **अज्ञान**-ये अनादि है, इसकी आवरण और विक्षेप दो शक्तियाँ हैं २,३ **आवरण**-जो ब्रह्म को ढाँक लेता है, ये भी दो प्रकार का है :: **असत्वापादक**-ब्रह्म नहीं है :: **अभानापादक**-ब्रह्म भासता नहीं है **विक्षेप**-पंचभूत व उनसे उत्पन्न चराचर जगत ४ ब्रह्म के स्वरूप बोधक **अवान्तरवाक्य** से **परोक्ष ज्ञान** जिसके द्वारा असत्वापादक आवरण का और ५ ब्रह्म-जीव के एकत्व बोधक **महावाक्य** से **अपरोक्ष-ज्ञान** जिसके द्वारा अभानापादक आवरण के नाश हो जाता है ६ स्वरूपज्ञान से **दुःख निवृत्ति** तथा ७ **अपार हर्ष प्राप्ति** | *1st Part* |
| 43 | 43.mp3 | 45 | ⊕ | A ⊕ | | **पैंग्लोपनिषद + योगवाशिष्ठ :: ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :: १ शुभीच्छा** - सुखरूप ब्रह्म शुभ है ब्रह्म को जानने की इच्छा **शुभेच्छा** है, जिनके हृदय में 'मल-विक्षेप' नहीं है केवल अज्ञान है, जो साधन चतुष्ट्य सम्पन्न है वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है। **ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र के धर्म निरूपण** २ विचारणा ३ तनुमानसी ४ सत्वापत्ती ५ असनशक्ति ६ पदार्थाभावनी ७ तुरीयगाह | |
| 44 | 44.mp3 | 58 | ⊕ | B ⊕ | | **पैंग्लोपनिषद + योगवाशिष्ठ :: ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :: १ शुभीच्छा** - सुखरूप ब्रह्म शुभ है ब्रह्म को जानने की इच्छा **शुभेच्छा** है, जिनके हृदय में 'मल-विक्षेप' नहीं है केवल अज्ञान है, जो साधन चतुष्ट्य सम्पन्न है वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है। अनेक जन्मों के पापरूपी **मल-नाश** के लिये **कर्मयोग निरूपण, मन्दालसा का प्रसंग** २ विचारणा ३ तनुमानसी ४ सत्वापत्ती ५ असन शक्ति ६ पदार्थाभावनी ७ तुरीयगाह। **विक्षेप-नाश** का साधन **भक्तियोग निरूपण** यानि चित्त एकाग्रता अथवा मन निग्रह के उपाय :- १ भगवत् चिन्तन का अभ्यास २ संसार को स्वप्नवत् जानकर वैराग्य | |
| 45 | 45.mp3 | 45 | ⊕ | C ⊕ | | **ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :: १ शुभीच्छा** - सुखरूप ब्रह्म शुभ है ब्रह्म को जानने की इच्छा **शुभीच्छा** है, जो साधन चतुष्ट्य सम्पन्न है वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है। मल दोष के नाश हेतु **कर्मयोग - निष्काम** एवं वेद विहित कर्म ही धर्म है **१ सामान्य कर्म** - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अक्रोध, गुरुशुश्रुषा, शौच, सन्तोष, आर्जवम्, अमानित्वं, अदम्भित्वं, आस्तिकत्वं **२ विशेष कर्म** - वर्णपदाधिकारानुसार कर्म। **भक्तियोग** - श्रीमद्भागवत् में नवधा भक्ति । **शौच** :: *जल से देह की, सत्य से मन की, विवेक-वैराज्ञ + चतुष्ट्य साधनरूपी तप से जीवात्मा की तथा ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है।* | |
| 46 | 46.mp3 | 55 | ⊕ | D ⊕ | | **ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :: १ शुभीच्छा** - सुखरूप ब्रह्म शुभ है ब्रह्म को जानने की इच्छा **शुभीच्छा** है, जिनके हृदय में 'मल-विक्षेप' नहीं है केवल अज्ञान है, जो साधन चतुष्ट्य सम्पन्न है वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है। अनेक जन्मों के पापरूपी **मल-नाश** के लिये **कर्मयोग** तथा **विक्षेप-नाश** का साधन **भक्तियोग** अभीष्ट है-**'नवधा भक्ति'** का उल्लेख। **परीक्षित और शुकदेवजी की कथा** | |
| 47 | 47.mp3 | 47 | | E *Complete* | | **ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :: १ शुभीच्छा** - सुखरूप ब्रह्म शुभ है ब्रह्म को जानने की इच्छा **शुभीच्छा** है, साधन चतुष्ट्य सम्पन्न ही ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है, अनेक जन्मों के पापरूपी **मल-नाश** के लिये **कर्मयोग** तथा **विक्षेप-नाश** का साधन **भक्तियोग** अभीष्ट | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | Complete | है-भ०राम द्वारा **'नवधा भक्ति' निरूपण**। **साधन चतुष्टय** :: विवेक-ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या वैराग्य-इस मृत्युलोक से ब्रह्मलोक तक सभी भोग मिथ्या हैं उन्हें स्वप्नवत् जानकर उनका त्याग ही वेराग्य है षट्क सम्पदा-शम, दम, उपरति/भोगों में ग्लानि, तितीक्षा, श्रद्धा, समाधान/विक्षेप का नाश मुमुक्षता **ज्ञानयोग** ऐसे अधिकारी शिष्य के हाथ में समिधा लेकर श्रोत्रीय-ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जाने पर गुरु द्वारा ज्ञान का उपदेश १ **विचारणा** - गुरु द्वारा ब्रह्म का विचार - 'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म' - परोक्षज्ञान, हे शिष्य! 'तत्त्वमसि' - अपरोक्षज्ञान २ **तनुमानसी** - श्रवण के बाद मनन और निधिध्यासन करने से ज्ञान पक्का होता है ३ **सत्वापत्ति** - इसमें ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति है व संसार स्वप्नवत् भासता है ४ **अशनशक्ति** - संसार में आसक्ति का नाश ५ **पदार्था भावनी** - ज्ञानी की दृष्टि में संसार के पदार्थों का अभाव ६ **तुरीयगाह** - गाढ़समाधि । प्रथम तीन अवस्थाऐं जागृत, ४थी स्वप्न तथा ५वीं, ६टी और ७तवीं अवस्थाऐं क्रमशः निद्रा, गाढ़निद्रा एवं प्रगाढ़निदा के समान हैं । | |
| 48 | 48.mp3 | 46 | | | सृष्टि के आदि में भगवान से रज्जु में सर्प की भाँति महामाया शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ । यह माया त्रिगुणात्मिका है इस माया ने विद्या और अविद्यारूप धारण किया। ब्रह्म का विद्यामाया में प्रतिबिम्ब सर्वज्ञ-ईश्वर तथा अविद्या माया में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब अल्पज्ञ-जीव कहलाया। ये जीव ईश्वर की भक्ति करके ईश्वरकृपा से अपने बिम्ब स्वरूप शुद्धब्रह्म को जान लेता है। जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार ईश्वर अपनी माया से करते हैं पर जीव को ये माया जीव के वास्तविक स्वरूप को ढाँककर विक्षेप शक्ति से जगत दिखा देती है और उसमें अहंता-ममता कर जीव उसमें फँस जाता है। जो जीव मेरी भक्ति करता है उसे मैं अपनी माया और मुझ ईश्वर एवं उस जीव का परमार्थ स्वरूप बता देता हूँ। मेरी माया सत् को ढाँककर असत् को सत् करके दिखा देती है अतः परमार्थ में एकत्व जानो और व्यवहार में वर्णाश्रम-पदाधिकारानुसार यथोचित धर्मानुकूल व्यवहार करो। | |
| 49 | 49.mp3 | 40 | | ससा० का **ध्यान** एवं निनि० का **ज्ञान** | **'राम कृष्ण'** आदि भगवान के ससा० स्वरूप हैं और **'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म'** निनि०स्वरूप बताया गया है। ससा० का तो **ध्यान** तथा निन० का **ज्ञान** बताया गया है। ससा० **ध्यान में चार चीज़ें होती हैं** - १ **विधि**-इष्ट ध्येय की रुचि के अनुसार २ **विश्वास** ३ **इच्छ** ४ **प्रयत्न**- मन को संसार से हटाकर भगवान में लगाना प्रयत्न है। मैं स्वरूपा बुद्धि का मन अबोध बालक के समान है जिसे अपने हित-अहित का ज्ञान नहीं होता है। बुद्धि माता के बताने पर ही बालकरूप मन को बोध होता है कि संसार के के ध्यान से जन्म-मृत्यु का बन्धन तथा भगवान के ध्यान से मुक्ति है और ज्ञान में दो चीज़ें होती हैं - १ प्रमाण २ प्रमेय ।ध्यान दो प्रकार से किया जाता है :- क **ध्येय ध्यान** :: ध्येय/ इष्ट के अनुसार उनका स्वरूप ध्यान जैसे भग० विष्णु के चतुर्भुज रूप का ध्यान ख **प्रतीक-ध्यान** :: इसमें प्रतीक में ध्येय के अनुसार भावना की जाती है तदोपरान्त उनका ध्यान। **निनि० के ज्ञान में दो वस्तुऐं हैं** :- **प्रमेय** - वेद के अवान्तर वाक्य **'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म'** से ब्रह्म के सच्चिदानंद स्वरूप की **ब्रह्माकार वृत्ति** उत्पन्न होती है, ये परोक्षज्ञान है तथा **प्रमाण** - वेद के **'तत्त्वमसि'** महावाक्य से अपरोक्षज्ञान यानि आत्मा/परमात्मा/भगवान से साक्षात्-कार होता है :: **लिंग = शरीर या मूर्ति, स्वरूप = सच्चिदानंद आत्मा** :: | *Very Imp* |
| 50 | 50.mp3 | 45 | | | त्रिकांडमय वेद को त्रिवेणी की संज्ञा दी है और त्रिवेणी में स्नान से मुक्ति बतायी है। **गंगा-यमुना-सरस्वती** का स्थूलरूप से प्रयाग राज में संगम होता है, ये **स्थूल त्रिवेणी** है। रामायण में संतो को भी सूक्ष्म त्रिवेणी बताया है। ये संत चलते-फिरते प्रयागराज तीर्थ हैं जो सब देश में सबको सुलभ हैं इनमें **कर्म-उपासना-ज्ञान सूक्ष्म त्रिवेणी** बहती है। वेद में जो विधि-निषेध कर्मयोग है उसे 'यमुना' बताया है, भगवान की भक्ति को 'गंगा' बताया है इसमे स्नान करने से मन की चंचलता दूर हो जाती है, फिर ब्रह्म के विचार और प्रचार को 'सरस्वती' बताया है इसमें स्नान करने से अज्ञान-आवरण नष्ट हो जाता है। ज्ञान को अज्ञान से राग-द्वेष नहीं है किन्तु वह स्वभाववश ही ज्ञान के समक्ष नहीं रह सकता । कर्म-उपासना से रज्जु में सर्पवत् जगत का निवारण नहीं होता । आत्मा के अज्ञान से ही जगत भासता है तथा इस अज्ञान-आवरण के नाश बिना भव-बन्धन से मुक्ति सम्भव नहीं है। भक्ति माता के ज्ञान और वैराग्य वीर पुत्र ही अज्ञानरूपी दैत्य को मारने में समर्थ हैं। | |